बाब एक

उसकी पैदाइश और उसका अबद से होना

इस सरज़मीन पर पैदा होने वाले अरबों इंसान जीते और मरते हैं। किसी भी शख़्स की पैदाइश बेमिसाल कैसे हो सकती है? क्या कोई शख़्स अपनी पैदाइश का वक़्त, जगह या ख़ानदान मुक़र्रर कर सकता है? इस बाब में हम यिसू' मसीह की पैदाइश और उसके इब्तिदा से होने पर बग़ौर मुशाहिदा करेंगे के किस किस तरह वो हम सब से अलग हैं, जैसे के किताब–ए–मुक़द्दस का दावा है।

बसीरत: *यसा'याह का नविश्ता यहूदियों के क़दीम सहीफों का एक हिस्सा है जिसे यिसू' की पैदाइश से तक़रीबन 700 बरस क़ब्ल लिखा गया था। अपने सहीफ़े में नबी यसा'याह ने आने वाले मसीह के पैदा होने, वफ़ात पाने, दफ़्न होने और जी उठने की पेशिंगोई की है।*

ढूँढ़ निकालें:

यसा'याह 7:14 और 9:6–7 से ये आयतें पढ़िये।

- **आने वाले मसीह** के साथ **बेटा** और **लड़का** के हवालों पर सलीब का निशान लगा दीजिये: ✝ । किताब–ए–मुक़द्दस के कलाम पर साफ साफ निशान लगाने से हम आहिस्ता चलकर बुनियादी लफ़्ज़ों पर तवज्जो दे सकते हैं।

यसा'याह 7:14

14 "लेकिन ख़ुदावंन्द आप तुम को एक निशान बख़्शेगा। देखो, एक कुंवारी हामिला होगी, और बेटा पैदा होगा और वो उसका नाम 'इम्मानुएल' रखेगी। (नोट कीजिए: इम्मानुएल के माइने हैं "ख़ुदा हमारे साथ है")

यसा'याह: 9:6–7

6 इसलिए हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ, और हम को एक बेटा बख़्शा गया, और सल्तनत उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम 'अजीब मुशीर, ख़ुदा–ए–क़ादिर, अब्दियत का बाप, सलामती का शहज़ादा होगा।

7 उसकी सल्तनत के इक़बाल और सलामती की कुछ इन्तिहा न होगी; वो दाऊद के तख़्त पर और उसकी ममलुकत पर आज से अबद तक हुक्मरान रहेगा, और 'अदालत और सदाक़त से उसे क़याम बख़्शेगा। रब्ब–उल–अफ़वाज की ग़य्यूरी ये करेगी।

एक बार फिर से यसा'याह 9:6–7 पढ़िये और इस बार...

- **सल्तनत, तख़्त, ममलुकत** और उनके इस्मी–इशारों पर ताज का निशान लगाइये।
- (वक़्त) के हवाले जैसे **अबद, इन्तिहा न होगी** और **आज से अबद तक** पर एक गोला बना दीजिये।

इस पर ख़ुद ही ग़ौर कीजिये या दूसरों के साथ मश्वरा करके अपने जवाब लिख लीजिये:

- वो क्या क्या नाम और लक़ब कुंवारी से पैदा होने वाले बेटे को दिए गए हैं?

- यसा'याह 9 में उसकी सल्तनत और ममलुकत की सिफ़तें बयान करने वाले किन किन अल्फ़ाज़ों का इस्तेमाल किया गया है?

COPY

- इसे कैसे मुकम्मल किया जाएगा? (पढ़ें यसा'याह 9:7)

ढूँढ़ निकालें:

ख़ुदा ने बादशाह दाऊद से अहद किया था, कि यिसू' जिसका बापदादा वो कहलाएगा उसकी सल्तनत अब्द–अल–आबाद रहेगी और जिसकी कुछ इंतिहा न होगी। (2 समुएल 7:12-17)

कुँवारी से पैदा होने वाला मसीह दाऊद की सल्तनत पर अबद तक हुक्मरान रहेगा।

अब हम इस नबूव्वत के पूरे होने के बारे में पढ़ेंगे। यिसू' मरियम नाम की एक कुंवारी से पैदा हुआ। नए अहदनामे की चार इंजीलों में से एक के लिखने वाले लूक़ा ने, इस क़िस्से को दर्ज किया है।

आइये पढ़ें लूक़ा 1:26-35; 2:1-11

- **यिसू'** के साथ **बेटा, मौलूद-ए-मुक़द्दस**, **पहलौठा बेटा, मुनज्जी, मसीह ख़ुदावंद** जैसे हवालों पर सलीब का निशान लगा दीजिये ✝ ।

लूक़ा 1:26-35

26 छठे महीने में जिबराईल फ़िरिश्ता ख़ुदा की तरफ़ से गलील के एक शहर में जिसका नाम नासरत था, एक कुँवारी के पास भेजा गया,

27 जिसकी मंगनी दाऊद के घराने के एक मर्द यूसुफ़ नाम से हुई थी–और उस कुँवारी का नाम मरियम था।

28 और उस फ़िरिश्ते ने उसके पास अन्दर आकर कहा, "सलाम तुझ को! जिस पर फ़ज़्ल हुआ है, ख़ुदावंन्द तेरे साथ है।"

29 वो इस कलाम से बहुत घबरा गई और सोचने लगी के ये कैसा सलाम है।

30 फ़िरिश्ते ने उससे कहा, "ऐ मरियम!.खौफ़ न कर क्यूँके ख़ुदा की तरफ़ से तुझ पर फ़ज़्ल हुआ है।

31 और देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा; उसका नाम यिसू' रखना।

32 वो बुज़ूर्ग होगा और ख़ुदा ता'ला का बेटा कहलाएगा और ख़ुदावंन्द ख़ुदा उसके बाप दाऊद का तख़्त उसे देगा।

33 वो या'क़ूब के घराने पर अबद तक बादशाही करेगा और उस की बादशाही का आख़िर न होगा।"

34 मरियम ने फ़िरिश्ते से कहा, "ये क्यूँकर होगा, जबके मैं मर्द को नहीं जानती।"

35 फ़िरिश्ते ने जवाब में उससे कहा, "रूह–उल–क़ुदूस तुझ पर नाज़िल होगा और ख़ुदा ता'ला की क़ुदरत तुझ पर साया डालेगी, और इस सबब से वो मौलूद–ए–मुक़द्दस ख़ुदा का बेटा कहलाएगा।

लूक़ा 2:1-11

1 उन दिनों में ऐसा हुआ कि क़ैसर औगुस्तुस की तरफ़ से ये हुक्म जारी हुआ कि सारी दुनिया के लोगों के नाम लिखे जाएँ ।

2 ये पहली इस्म नवीसी सूरिया के हाकिम कोरिन्युस के 'अहद में हुई ।

3 और सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने–अपने शहर को गए ।

4 पस यूसुफ़ भी गलील के शहर नसरत से दाऊद के शहर बैतलहम को गया जो यहूदिया में है, इसलिए के वो दाऊद के घराने और औलाद से था ।

5 ताके अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो हामिला थी, नाम लिखवाए ।

6 जब वो वहाँ थे तो ऐसा हुआ के उसके वज़ा'–ए–हम्ल का वक़्त आ पहुँचा,

7 और उसका पहलौठा बेटा पैदा हुआ और उसने उसको कपड़े में लपेट कर चरनी में रख्खा क्यूँके उनके वास्ते सराय में जगह न थी ।

8 उसी 'इलाक़े में चरवाहे थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने गल्ले की निगहबानी कर रहे थे ।

9 और ख़ुदावंन्द का फ़िरिश्ता उनके पास आ खड़ा हुआ, और ख़ुदावंन्द का जलाल उनके चौगिर्द चमका, और वो निहायत डर गए ।

10 "मगर फ़िरिश्ते ने उनसे कहा," डरो मत ! क्यूँकि देखो, मैं तुम्हें बड़ी ख़ुशी की बशारत देता हूँ जो सारी उम्मत के वास्ते होगी,"

11 के आज दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए एक मुनज्जी पैदा हुआ है, या'नी मसीह ख़ुदावंन्द

एक बार फ़िर से लूक़ा 1:26-35 और लूक़ा 2:1-11 पढ़ें और इस बार....

- **तख़्त** और **बादशाही** जैसे लफ्ज़ों पर ताज का निशान लगा दीजिये :
- **अबद** और **आख़िर** जैसे दौर के हवालों पर गोला बना दीजिये।

इस पर ख़ुद ही ग़ौर कीजिये या दूसरों के साथ मश्वरा करके अपने जवाब लिख लीजिये:

- यिसू' पर निशान लगाकर और ग़ौर करके आप क्या सीख रहे हैं?

- आप ने उसकी बादशाही की गुंजाइश के बारे में क्या सीखा है? वक़्त या दौर के हवालों पर क़रीब से ग़ौर कीजिये।

COPY

- लूक़ा 1:34 में मरियम की परेशानी क्या थी? फ़िरिश्ते ने उसकी परेशानी कैसे हल की?

- किस किस तरह यिसू' हमारे मुक़ाबले में बेमिसाल है?

- यसा'याह 7:14 और 9:6-7 की उन नबूव्वतों के पूरे होने को लिख लीजिये जिन्हें आप ने शुरू के हिस्से में पढ़ा है। कौन सी पूरी हुई और किन किनका पूरा होना बाक़ी है?

आगे पढ़कर हम देखेंगे के ये सहीफ़ा इस मसीह के बारे में क्या कहता है।

ढूँढ़ निकालें:

पढ़ें यूहन्ना 1:1-3, 14-17 और कुलुस्सियों 1:13-17 और...

- यिसू' के साथ **कलाम**, **इकलौता** और **बेटा** जैसे हवालों पर सलीब का निशान लगा दें: ✝।
- वक़्त के हवाले जैसे के **इब्तिदा**, मेरे बाद, पहले **मौलूद** और **पहले** पर गोला बना दें।

यूहन्ना 1:1-3, 14-17

1 इब्तिदा में कलाम था, और कलाम ख़ुदा के साथ था, और कलाम ख़ुदा था।

2 यही इब्तिदा में ख़ुदा के साथ था।

COPY

3 सब चीज़ें उसके वसीले से पैदा हुईं, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से कोई चीज़ भी उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई।

14 और कलाम मुजस्सिम हुआ और फ़ज़्ल और सच्चाई से मा'मूर होकर हमारे दर्मियान रहा, और हम ने उसका जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल।

15 यूहन्ना ने उसकी बाबत गवाही दी, और पुकार कर कहा है, "ये वही है, जिसका मैं ने ज़िक्र किया के जो मेरे बा'द आता है, वो मुझ से मुक़द्दम ठहरा क्यूँके वो मुझ से पहले था।

16 क्यूँके उसकी मा'मूरी में से हम सब ने पाया, या'नी फ़ज़्ल पर फ़ज़्ल।

17 इसलिए के शारी'अत तो मूसा की मा'रिफत दी गई, मगर फ़ज़्ल और सच्चाई यिसू' मसीह की मा'रिफत पहूँची।

कुलुस्सियों 1:13-17

13 उसी ने हम को तारीकी के क़ब्ज़े से छुड़ाकर अपने 'अज़ीज़ बेटे की बादशाही में दाखिल किया,

14 जिसमें हम को मख़्लसी या'नी गुनाहों की मु'आफ़ी हासिल है।

15 वो अनदेखे ख़ुदा की सूरत और तमाम मख़्लूक़ात से पहले मौलूद है।

16 क्यूँके उसी में सब चीज़ें पैदा की गईं; आसमान की हों या ज़मीन की, देखी हों या अनदेखी, तख़्त हों या रियासतें या हुकुमतें या इख़्तियारात, सब चीज़ें उसी के वसीले से और उसी के वास्ते पैदा हुई हैं।

17 वो सब चीज़ों से पहले है, और उसी में सब चीज़ें क़ाइम रहती हैं।

इस पर ख़ुद ही ग़ौर कीजिये या दूसरों के साथ मश्वरा करके अपने जवाब लिख लीजिये।

- यिसू' के हवालों पर निशान लगाकर आपने क्या सीखा है?

COPY

- बक़ौल यूहन्ना 1:3 हर चीज़ का ख़ालिक कौन है?

- हमने यूहन्ना 1:14 में पढ़ा के कलाम मुजस्सिम हुआ और हमारे दर्मियान रहा। ये इशारा किस की जानिब है?

- अनदेखे ख़ुदा की सूरत कौन है?

- आसमान और ज़मीन की चीज़ें कैसे और किस लिए बनाई गईं हैं?

- कुलुस्सियों 1:17 के मुताबिक़ किस में सब चीज़ें काइम रहती हैं?

बसीरत: *"पहले मौलूद" "पहले ख़ल्क हुआ" के बराबर नहीं होता। जब के यिसू' में ज़ात–ए–इंसानी थी, उसकी ज़ात–ए–इलाही कभी ख़ल्क नहीं की गई थी; जैसे यूहन्ना ने कहा "इब्तिदा में," "ख़ुदा के साथ" और "ख़ुदा था।"*

COPY

आगे हम देखेंगे के यिसू' यहूदियों से बात करता है। अब्राहम, यहूदियों का वो बुज़ुर्ग था, जो यिसू' के पैदा होने से 2000 बरस क़ब्ल पैदा हुआ और वफ़ात पा चुका था।

ढूँढ निकालें:

पढ़ें यूहन्ना 8:54–59 और निशान लगाएँ...

- अब्राहम और उसके हर एक हवाले पर बड़ा सा **अ**।
- **यिसू'** और उसके सभी हवालों और इस्मी–इशारों पर सलीब का निशान: ✝।

यूहन्ना 8:54–59

54. यिसू' ने जवाब दिया, "अगर मैं आप अपनी बड़ाई करूँ, तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं; लेकिन मेरी बड़ाई मेरा बाप करता है, जिसे तुम कहते हो के हमारा ख़ुदा है।
55. तुम ने उसे नहीं जाना, लेकिन मैं उसे जानता हूँ; और अगर कहूँ के उसे नहीं जानता, तो तुम्हारी तरह झूटा बनूँगा। मगर मैं उसे जानता और उसके कलाम पर 'अमल करता हूँ।
56. तुम्हारा बाप अब्राहम मेरा दिन देखने की उम्मीद पर बहुत ख़ुश था, चुनांचे उसने देखा और ख़ुश हुआ।"
57. यहूदियों ने उससे कहा, "तेरी उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं, फिर क्या तूने अब्राहम को देखा है?"
58. यिसू' ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, के पेशतर उससे के अब्राहम पैदा हुआ मैं हूँ।"
59. पस उन्होनें उसे मारने को पत्थर उठाए, मगर यिसू' छिपकर हैकल से निकल गया।

COPY

बसीरत: "मैं हूँ" ख़ुदा का वो नाम है जो उसने अपना तार्रूफ़ देते हुए मूसा को जलती हुई झाड़ी में से बताया था मूसा जो यिसू' मसीह से 1400 बरस पहले था उसे ख़ुदा ने बनी–इस्राइल को मिस्र की ग़ुलामी से नजात देने का ज़रिया बनाया था। अपना तार्रूफ़ "मैं हूँ" देकर यिसू' अपनी बराबरी और पहचान उस ख़ुदा से कर रहा था जो जलती हुई झाड़ी में मूसा पर ज़ाहिर हुआ था।

इस पर ख़ुद ही ग़ौर कीजिये या दूसरों के साथ मश्वरा करके अपने जवाब लिख लीजिये:

- इन आयतों में यिसू' क्या दावा कर रहा था? वो अपने ही बारे में क्या ज़ाहिर कर रहा था?

- यिसू' के दावों पर यहूदियों ने किस तरह के ऐतराज किए?

- यिसू' ने इन ऐतराज़ात का जवाब कैसे दिया?

- आप के ख़याल में वो क्या वजह थी के यहूदीयों ने बिगड़कर "उसे मारने को पत्थर उठाए", जैसा के आयत 59 में दर्ज है?

COPY

ढूँढ़ निकालें:

पढ़ें इब्रानियों 1:1-3,10-12 और

- **यिसू' खुदावंन्द** और **बेटे** के सभी हवालों पर सलीब का निशान लगाइए: ✝
-

बाप और उसके सभी इस्मी–इशारों पर त्रिकोण बनाइये।

इब्रानियों 1:1-3,10-12

1. अगले ज़माने में ख़ुदा ने बाप–दादा से हिस्सा–ब–हिस्सा और तरह–ब–तरह नबियों की मा'रिफ़त कलाम करके,

2. इस ज़माने के आख़िर में हम से बेटे की मा'रिफ़त कलाम किया, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस ठहराया और जिसके वसीले से उसने 'आलम भी पैदा किए।

3. वो उसके जलाल का परतौ और उसकी ज़ात का नक़्श होकर सब चीज़ों को अपनी क़ुदरत के कलाम से सम्भालता है। वो गुनाहों को धोकर 'आलम–ए–बाला पर किब्रिया की दहनी तरफ़ जा बैठा;

10. और ये के, "ऐ ख़ुदावंन्द! तू ने इब्तिदा में ज़मीन की नीव डाली, और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी हैं।

11. वो नेस्त हो जाएँगे, मगर तू बाक़ी रहेगा; और वो सब पोशाक की मानिन्द पुराने हो जाएँगे।

12. तू उन्हें चादर की तरह लपेटेगा, और वो पोशाक की तरह बदल जाएँगे; मगर तू वहीं है और तेरे बरस ख़त्म न होंगे।"

COPY

इस पर ख़ुद ही ग़ौर कीजिये या दूसरों के साथ मश्वरा करके अपने जवाब लिख लीजिये:

- माज़ी में ख़ुदा किस तरह बाप–दादाओं (बुज़ुर्गों) से कलाम करता था? अब वो हम से किस तरह कलाम करता है?

- इन आयतों से हम यिसू' के बारे में क्या सीखते हैं?

- यिसू' कहाँ था जब ख़ुदा ने सारा 'आलम बनाया?

- वो कौन है जो सब चीज़ों को संभालता है और वो भी किस तरह से?

- इस वक़्त यिसू' कहाँ है?

- ज़मीन की नीव किसने डाली और आसमान किसके हाथ की कारीगरी है?

- ख़ुदावंन्द ज़मीन और आसमान के साथ क्या करेगा?

COPY

बसीरतें: *आम तौर से एक "वारिस" वो शख़्स होता है जो क़ानूनी तौर पर उससे पहले वाले शख़्स की मौत पर उसकी मिल्कियत ओर दर्जे का हक़दार बन जाता है। यहाँ पर, लाज़मी है, के ख़ुदा का यिसू' को हर चीज़ का वारिस ठहरना इस बात से जुड़ा है के ख़ुदा ने सारा 'आलम उसीके वसीले से बनाया है । ज़ाहिर है के अपने बेटे को वारिस बनाने के लिए ख़ुदा का मरना मुमकिन नहीं है। ये आयतें सिखाती हैं के यिसू' हर चीज़ को अपनी क़ुदरत के कलाम से संभालता है, और गुनाहों को धोकर बाप के दाहिने जा बैठा है। आगे के बाबों में हम यिसू' की शख़्सियत और उसके कामों के बारे में और ज़ियादा सीखेंगे।*

ढूँढ निकालें:

पढ़ें यूहन्ना 17:1-5 और निशान लगाएँ...

- **यिसू'** और **बेटे** और **बेटा** के सभी हवालों पर सलीब का : ✝।
- ख़ुदा बाप के सभी हवालों और इस्मी–इशारों पर तिकोन।

यूहन्ना 17:1-5

1 यिसू' ने ये बातें कहीं; और अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाकर कहा, "ऐ बाप! वो घड़ी आ पहुँची; अपने बेटे का जलाल ज़ाहिर कर, ताके बेटा तेरा जलाल ज़ाहिर करे।

2 चुनाँचे तूने उसे हर बशर पर इख़्तियार दिया है, ताके जिन्हें तूने उसे बख़्शा है उन सबको वो हमेशा की ज़िन्दगी दे।

3 और हमेशा की ज़िन्दगी ये है के वो तुझ ख़ुदा–ए–वाहिद और बरहक़ को, और यिसू' मसीह को जिसे तूने भेजा है, जानें।

4 जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसको तमाम करके मैंने ज़मीन पर तेरा जलाल ज़ाहिर किया।

5 और अब ऐ बाप! तू उस जलाल से जो मैं दुनिया की पैदाइश से पेश्तर तेरे साथ रखता था, मुझे अपने साथ जलाली बना दे।

COPY

इस पर ख़ुद ही ग़ौर कीजिये या दूसरों के साथ मश्वरा करके अपने जवाब लिख लीजिये:

- इन आयतों से आपने यिसू' की बाबत क्या सीखा?

- आपने ख़ुदा बाप की बाबत क्या सीखा?

- आयत 2 में यिसू' ने क्या कहा के उसके पास क्या है, और उसे ये किसने दिया और इसके साथ वो क्या करेगा?

- आयत 3 में यिसू' का हमेशा की ज़िन्दगी की बाबत कहने का मतलब क्या था के वो "ये है"?

- आयत 5 में यिसू' ने अपने ही बारे में क्या दावा किया? क्या आप देख सकते हैं के ये उससे मेल खाता है जो हमने इससे पहले यिसू' के बाबत सीखा?

COPY

इसका खुलासा करें।

इस बाब में हमने देखा के यिसू' ख़ुदा का बेटा है, और जिसे कहा गया है "इम्मानुएल" "(ख़ुदा हमारे साथ है)"। हमने देखा के आगे चलकर सल्तनत उसके कंधे पर होगी। उसका नाम होगा, 'अजीब मुशीर, ख़ुदा–ए–क़ादिर, अब्दियत का बाप, सलामती का शहज़ादा।" उसकी सल्तनत के इक़बाल और सलामती की कुछ इंतिहा न होगी। उसकी सल्तनत 'अदालत और सदाक़त से चलेगी। वो आज से अबद तक दुनिया पर हुकूमत करेगा। हमने इब्तिदा में भी देखा के जो कलाम मुजस्सिम हुआ वो ख़ुदा के साथ था और सब चीज़ें उसीके वसीले से वजूद में आईं। "सब चीज़ें" से मतलब हुआ पैदा हुई मख़्लूक़। वो सच्चाई और फ़ज़्ल से मामूर हुआ।

यिसू' अनदेखे ख़ुदा की सूरत है और ख़ुदा की तमाम मख़्लूक़ात की ख़िल्क़त से पहले मौलूद है। आसमान की हों या ज़मीन की, देखी हों या अनदेखी, सब चीज़ें यिसू' के वसीले से और यिसू' के वास्ते पैदा हुई हैं। वो सब चीज़ों से पहले है और उसी में आलम भर की चीज़ें क़ाइम रहती हैं। यिसू' ने ज़मीन और आसमान की नीव रखी है। आलम भर के अरबों खरबों सितारे और कहकशाएँ उसी के हाथ की कारीगरी हैं। और एक दिन उन्हें वो चादर की तरह लपेटेगा। इस पर हम और ज़ियादा पढ़ेंगे ख़ास तौर से उस आख़री बाब में जिसका उनवान है **"उसकी आमद–ए–सानी।"**

COPY

precepture.org